Arts Science & Commerce College
Naldurg

Impact Factor – 6.261 | Special Issue - 145 | Feb. 2019 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY
UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-research Journal

RECENT TRENDS IN ENGLISH, MARATHI, HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

- GUEST EDITOR -
Principal Dr. P. P. Sharma

- CHIEF EDITOR -
Dr. Dhanraj T. Dhangar

- EXECUTIVE EDITORS -
Dr. S. S. Chouthaiwale
Dr. A. T. More | Dr. P. S. Patil

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Impact Factor – 6.261 ▪ Special Issue - 145 ▪ Feb. 2019 ▪ ISSN – 2348-7143

Arts Science & Commerce College Naldurg

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

One Day National Seminar On

RECENT TRENDS IN ENGLISH, MARATHI AND HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

... Organized by ...

Ajantha Education and Military Preparatory Institute, Aurangabad's

Indraraj Arts, Commerce & Science College, Sillod,

Dist. Aurangabad - 431112 (M.S.)

... Guest Editor ...

Dr. P. P. Sharma

Principal

... Chief Editor ...

Dr. Dhanraj T. Dhangar

... Executive Editor ...

Dr. S. S. Chouthaiwale (English)

Dr. A. T. More (Marathi)

Dr. P. S. Patil (Hindi)

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Arts Science & Commerce College Naldurg

१२८. हिंदी दलित साहित्य की समीक्षा ३४४
डॉ.विजय शिवराम पवार
१२९. उपन्यास साहित्य रू किसान विमर्ष ३४६
प्रा. येडले दत्तात्रय लक्ष्मण
१३०. हिन्दी उपन्यासो में किसान एवं मजदूर की दशा एवं दिशा ३४९
प्रा डॉ शंकर गंगाधर शिवशेट्टे
१३१. केदारनाथ अग्रवाल की कविता में किसान जीवन ३५२
डॉ. मनोहर जमधाडे
१३२. समकालीन कथा–साहित्य में स्त्री–विमर्श ३५३
प्रा. तुकाराम पाराजी गावंडे
१३३. किन्नर जिंदगी का सच 'कबीरन' ३५५
डॉ.ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे
१३४. चकला में गूंजती नारी की चिंगारियां (आज बाजार बंद है इस उपन्यास से) ३५७
प्रा. डॉ.पुंजाराम रूपचंद भगोरे
१३५. हदी उपन्यासों में कृषक जीवन ३५९
कु. सुवर्णा जयराम काळे
१३६. व्यावसायिक हिंदी के नए प्रवाह (विज्ञान/पटकथा/गीत/आकाशवाणी/कम्प्युटर) ३६१
डॉ. प्रमोद पाटील, शेख अझहर जफर
१३७. समकालीन कथा–साहित्य में स्त्री–विमर्श ३६४
प्रा. तुकाराम पाराजी गावंडे
१३८. केदारनाथ अग्रवाल की कविता में किसान जीवन ३६६
डॉ. मनोहर जमधाडे
१३९. चकला में गूंजती नारी की चिंगारियां (आज बाजार बंद है इस उपन्यास से) ३६७
प्रा. डॉ.पुंजाराम रूपचंद भगोरे
१४०. वैश्विकरण के साथ जुडा भारतीय नारी समाज ३६९
डॉ. सुलक्षणा जाधव–घुमरे
१४१. आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित विमर्श ३७१
प्रा. डॉ. भालेराव सविता
१४२. वैश्वीकरण के दौर मे हिन्दी का स्थान ३७३
डॉ. प्रमोद पाटील, शैलेश प्रल्हाद मोरे
१४३. वैष्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में महिला कथा साहित्य : विकास एवं बदलाव का स्वरुप ३७५
प्रा. डॉ. मनिषा गंगाराम मुगळीकर
१४४. साहित्य सिनेमा और किन्नर विमर्ष ३७७
डॉ संतोष नामदेव तांदळे
१४५. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा की अवधारणा एवं स्वरूप ३७९
प्रा. पाटील एस. बी.
१४६. वैश्विक परिद्रष्य एवं विश्व में हिंदी की स्थिती ३८१
डॉ. चावडा रंजना यदुनंदन
१४७. अल्मा कबुतरी उपन्यास मे आदिवासी विमर्ष ३८४
डॉ. प्रमोद पाटील, श्रीमती जयश्री बाबुलाल किनारीवाल
१४८. किसानों के आत्मकथा से आत्महत्या के संघर्ष की गाथा "फॉस" ३८६
डॉ. हाशमबेग मिर्झा
१४९. आधुनिक हिंदी साहित्य में विविध विमर्श (आदिवासी, दलित और नारी) ३८९
जाधव प्रेमराज दादाराव

ISSN : 2348-7143
February 2019
RESEARCH JOURNEY Internationl Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | *Special Issue 145 :* Recent Trends in English, Marathi and Hindi Language and Literature

किसानों के आत्मकथा से आत्महत्या के संघर्ष की गाथा ''फॉस''

डॉ. हाशमबेग मिर्झा
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय नलदुर्ग (महा.)

Arts Science & Commerce College Naldurg

जिस प्रांत में भी किसानों की आत्महत्या की घटना होती है,
वहाँ की सरकार और केन्द्र सरकार पर,
जनसंहार का मुकद्या चलाया जाना चाहिए। .....डॉ. मैनेजर पाण्डेय

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार १९९५ से २०१० के बीच २,५६,९१३ किसानों नें आत्महत्या की है यदयपि यह सरकार व्दारा बताए गये आंकडे है। समाचार पत्र एचं मीडिया के अनुसार कहे तो इन बीस वर्षों में पाँच लाख से ज्यादा भारतीय किसानों ने आत्महत्या की है।

भारतीय समाज का साहित्य में आईना दिखानेवालें प्रेमचन्द के बाद भगवानदास मोरवाल (नरक मसीहा), राजू शर्मा (हलफनामा), जगदीश गुप्त (कभी न छोड़े खेत), विवेकी राय (सोना माटी) कमलकांत त्रिपाठी (बेदखल) काशीनाथ सिंह (रेहन पर रग्घू), संजीव (फ़ांस) और पंकज सुबीर का 'अकाल में उत्सव' आदि साहित्यकारों की एक जमात ही हिंदी में जन्मी जिन्होंने किसानों की सामाजिक एवं पारिवारिक स्थितियों का अंकन अपनी रचनाओं में किया है। इन उपन्यासकारों ने सामन्ती व्यवस्था, महजनी सभ्यता, जमींदारी प्रथा, जमीन चकबंदी, जमीन से बेदखली, भूमिहीन होना तथा बाजारवाद के कारण आम किसानों के जीवन में आए बदलाव आदि के कारण निर्माण हुई समस्याओं के कारण किसान आत्महत्या की ओर प्रवृत्त हो रहा है।

नव्वद के दशक में जब भारत ने डंकेल प्रस्ताव और बाजारीकरण की नीती को अपनाया उसी वक्त भारत के छोटे-छोटे उद्योग खत्म करने की योजना बन गई। बाजारीकरण और औद्योगिककरण के इस भागम भाग में किसानों की उपेक्षा, किसानी से पलायन और अन्त में आत्महत्या पर्याय बन गया। गोदान में प्रेमचंद होरी आत्महत्या नहीं करता किंतु उसे मरने पर बाध्य कर दिया जाता है। आज के दौर का किसान आत्महत्या करता है, इसे आधुनिक युग के कथाकार संजीव बेहद संजिदगी से पेश करते हैं। संजीव एक ऐसे कथाकार के रूप में जाने जाते हैं जो किसी भी विषय पर लेखन करने से पहले अनुसंधानात्मक दृष्टि से विचार करते है फिर उसपर उपाय के साथ समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

वाणी प्रकाशन दिल्ली से २०१५ में प्रकाशित संजीव का उपन्यास फॉस किसानों के जीवन की मर्मान्तक कहानी को रेखांकित करता है। लगभग २५५ पृष्ठों में ४२ अध्यायों में लिखे इस उपन्यास में संजीव ने भारतीय किसानों की आत्मा ही सामने लाकर रख दी है। यह उपन्यास किसानों के जन्म से लेकर मृत्यु तक का संपूर्ण लेखा-जोखा उनके सुख-दुख के साथ सकारात्मक दृष्टि से जनमानस के सामने लाता है।

विगत २० वर्षों में भारत में सबसे अधिक किसानों ने महाराष्ट्र में आत्महत्याएं की है। यही कारण है कि उपन्यास की कथावस्तु भी महारष्ट्र के 'यवतमाल जिले के 'बनगाँव' से ली गयी है। जो आधा वन है और आधा गाँव, एक ओर देखो तो जंगल दिखाई देता है दूसरी ओर पठार। 'बनगाँव' का वर्णन करते हुए संजीव की कलम लिखती हैं- भला कोई कह सकता है कि सुखाड़ के ठनठनाते यवतमाल जिले के इस पूरबी छोर पर 'बनगाँव' जैसा कोई गाँव भी होगा जो आधा वन होगा, आधा गाँव, आधा गीला होगा, आधा सूखा। स्कूल में लड़के के साथ लड़कियाँ भी, जुए में भैस के साथ बैल भी। जो भी होगा आधा-आधा।[१] उपन्यास का आरंभ होता है महाराष्ट्र विदर्भ के यवतमाल जिले के बनगाँव के एक किसान परिवार शिबू और शकून तथा उनकी दो बेटियों से। जिनकी अपनी दुनियाँ है, उनके अपने सुख-दुख है, सपनों की दुनियाँ है।' फॉस की कथावस्तु में एक पुरा किसान समाज बसा हुआ है। जिसकी कहानी में आशा वानखेड़े, सुनील, माधव आदि कई किसान, कई घर, कई खेत हैं। देश-भर के लिए अन्न उपजाने वाले किसानों की हत्याओं और उनके साथ की जाने वाली साजिशों की पुरी दास्ताँ यह उपन्यास व्यक्त करता है।

संजीव अपने उपन्यास फॉस में किसानों की आर्थिक समस्याओं का सामना करते-करते अंत में हताश और निराश होकर आत्महत्या करने की सोंच को इस तहर प्रस्तुत करते हैं कि मानों यह घटना हमारी आंखों के सामने घटित हो रही है। वर्तमान समय में महंगाई आकाश चूम रही है। लोग एक-दूसरे को फसा कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं सरकारी व्यवस्था किसानों के साथ छल कर रही है। बड़े जमींदारों, काश्तकारों तथा साधारण किसान और माध्यम वर्ग के किसानों का यही हाल है।

संजीव अभ्यासपूर्ण ढंग से यह बताना चाहते हैं कि पहले किसान फसल बोने के लिए अपने घर में ही रखे बीज का प्रयोग करते थे। उत्पादन की वृद्धि के लिए नए-नए बीजों का प्रयोग तथा उर्वर शक्ति बढ़ाने के लिए नई-नई खादों जैसी सामग्री का प्रयोग किया जाने लगा जिससे खेतों की उर्वर शक्ति धीरे-धीरे समाप्त होती गई। पहले किसानों को खादों की विशेषताएं दिखाकर उनसे प्रलोभन दिए गये फिर परिस्थिति से मजबूर किसान कर्ज के लिए बैंकों या ग्रामीण स्तर के साहुकारो की मदद लेने लगा। फसल अच्छी न होने से या सूखा, बाढ़ से किसान इन कर्ज को चुका नहीं पाता। दिन प्रतिदिन कर्ज बढ़ता जाता परिणाम स्वरूप किसान आत्महत्या कर रहा है। जिस

किसान हम अन्नदाता कहते हैं वही आज अपनी गरीबी भरी जिंदगी से टूटकर आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहा है। यही चित्र पुरे उपन्यास में दिखायी देता है।

संजीव दूसरा एक महत्वपुर्ण प्रश्न उपन्यास में उठातें हैं, अगर इतनी दिक्कतें किसानी में आती है तो किसान किसानी क्यों करता है ? किसानों के खेती न छोड़ पाने के प्रमुख दो कारण है, एक कृषि दासता तो दूसरा अन्य कोई विकल्प का न होना। इस प्रश्न को वे उपन्यास के प्रमुख पात्र शिबू के माध्यम से कहतें हैं, ''अकेला होता तो चला भी जाता कहीं ... नागपुर, नासिक, मुंबई, दिल्ली ... लेकिन ये दो-दो मुलगियाँ, बायको इन सबको लेकर कहाँ जाऊँ।''[२] अपनी हलात को वह जानता है, उसे पता है इस दुनियाँ में उसके समान कई और भी किसान है, जो अन्य रास्ता अपना नहीं सकते। क्योंकि उसने पैदा होते ही अपने माता-पिता को किसानी करते देखा है, उसके लिए यह खेत मात्र उपजीविका का साधन ही नहीं बल्कि उसके पुरखों की आत्मा का वास है। शिबू को समझाते हुए कलावती कहती है, ''तुम ही नहीं, इस देश के सौ में से चालीस शेतकरी आज ही खेती छोड़ दें अगर उनके पास कोई दूसरा चारा हो। ८० लाख ने तो किसानी छोड़ भी दी।''[३] शिबू मानसिकता को देखते हुए वह कहती है यह हमारे पुरखों की साख हैं इसे हम छोड नहीं सकते क्योकि यही हमारे नस-नस में बसा हुआ है, ''एक विद्वान ने कहा है कि खेती कोई धंधा नहीं, बल्कि एक लाइफ स्टाइल है जीने का तरीका, जिसे किसान अन्य किसी भी धंधे के चलते नहीं छोड़ सकता।''[४] अन्ततः उसे आत्महत्या करना पडता है।

महाराष्ट्र सरकारने किसानों की आत्महत्या को देखते हुए एक अध्यादेश पारित किया जिसके तहत अगर कोई किसान आत्महत्या करता है और उस पर किसी सरकारी बैंक का कर्ज है तो वह माफ कर दिया जाएगा। उपन्यास में मुख्य पात्र शिबू जब समस्याओं का सामना नहीं कर पाता और आत्महत्या कर लेता है, तब उसके आत्महत्या को पात्र ठहराने के लिए घरवालों को काफी मशक्कत करनी पड़ती है। यदि सरकारी कर्मचारी, बिचौलियों, दलालों को कुछ नहीं मिलता तो आत्महत्या, आत्महत्या नहीं ठहराते। अंत में घरवालों को मुआवजा भी नहीं मिलता है। किसान जानता है कि आत्महत्या को पात्र भी तभी बनाया जाता है जब किसी नेता से पहचान हो या किसी अफसर को घूस दो। शिबू के मामले में यही बात है, ''पोस्टमार्टम, पंचनामा ... घूस की डिमांड -पैसे दे दो इन्हें पात्र बना दे वरना।''[५] इतना ही नहीं मुआवजे के पैसे भी पूरे नहीं मिलते।

एक अजीब बात यह है कि जब तक किसान जीवित रहता है तब तक उसे दर-दर मारा-मारा भटकना पड़ता है और जब मर जाता है तब सरकार उसे मरने का मुआवजा देती है। वह भी उसे ही जिसके नाम से जमीन है। एक किसान अपने इसी दर्द को बयां करता है, ''बाप के नाम जमीन, मरा बेटा! आत्महत्या अपात्र! कारण जमीन तो उसके नाम थी ही नहीं।''[६] सरकारी नितियों के दोषों को स्पष्ट करते हुए वह आगे कहता है, ''सरकार कृपया हम किसानों को यह बताए कि आत्महत्या करते वक्त किन-किन बातों का ख्याल रखा जाए -कब और कैसे की जाती है आत्महत्या? किस पंडित से पूछकर ...? यह भी सिखाया जाए कि कैसे लिखी जाती है सुइसाइडल नोट!''[७] अतः महाराष्ट्र के किसानों के दर्द को व्यक्त करने में संजीव बहुत हद तक सफल भी हुए हैं।

उपन्यासकार ने उसन्यास में सरकारी योजनाओं का भी मजाक उडाया है। कब कौनसी योजना आम आदमी, मजदूर या किसानों तक सीधे पहुंचती है, इस पर भी सवालिया निशान लगाया हुआ है। संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना, स्वर्ण जयंती ग्राम योजना, मनरेगा, प्रधानमंत्री ग्रामोदय जैसी किसानोन्मुखी योजनाएं पूरे देश में लागु होने के बाद भी इसका कोई लाभ किसानों को क्यों नहीं मिल पा रहा है। उपन्यासकार की माने तो इसका सीधा लाभ बिचौलियों को मिलता है, जिसमें कृषि के नाम पर ऋण देने वाला बैंक, सेठ, साहूकार, महाजन, पुलिस अधिकारी, ग्रामविकास अधिकारी, तलाटी आदि सभी आते हैं।

संजीव हमारा ध्यान उस ओर भी ले जाना चाहते है, जहॉ कार्पोरेटर जगत का आम आदमी के जीवन से कोई संबंध नहीं पर उसके उत्पाद का बड़ा हिस्सा इन्हीं लोगों के बीच बेचा जाता है। योजनाएं किसानों के लिए बनती है पर किसान का कोई प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित नहीं होता। यह सब एअर कंडिशनर रूम में बैठकर होता है, जिन्हे उनकी किसी समस्या के बारे में कोई जानकारी नहीं है। उपन्यास का पात्र विजयेन्द्र कहता है, ''कई नेता तो जानते भी नहीं कि आलू ऊपर फलता है या नीचे, खेती धान की होती है, चावल की नहीं कि सरपत और गन्ने के पौधे में क्या फर्क है!''[८]

महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय में रहकर कई महिने अध्ययन करने के बाद संजीव ने इस कृति का निर्माण कराया है। इस कारण उनकी पैनी दृष्टि से विदर्भ और पूर्व महाराष्ट्र की कोई भी महत्वपुर्ण घटना नहीं छुट सकी। हमेशा किसानों को सब्सिडी देने की होती रही पर ऐसा कुछ हुआ ही नहीं। उल्टा किसानों की उपजाऊ भूमि पर भी कारपोरेट वाले, बिल्डर्स, दूसरे सेठ, फिल्म वालों का कब्जा होने लगा है। जो कृषि योग्य भूमि थी वह भी किसानों से छिनती चली गयी। नाना से मोहन जब कहता है कि उसे कोई काम चाहिए तब नाना कहता है, ''बालू, मिट्टी ईंट या खाद की ढुलाई। सड़कों के किनारे सारी खेती वाली जमीनें बिक चुकी हैं। मकान बन रहे हैं। आने वाले दिनों में सिर्फ बिल्डिगें होंगी, चमचमाती सड़के होंगी और चमचमाती गाडियाँ। न हमारे तुम्हारे जैसे लोग होंगे, न खेती, न हमारी-तुम्हारी बैलगाड़ियाँ।''[९] अर्थात उपन्यासकार यह दर्शाना चाहता है कि वैश्विकरण की आग सिर्फ शहरों तक ही सीमित नहीं रही बल्कि उसने गांव के लोगों से उनका काम और किसानों से उनकी जमिन भी छीन ली है।

संजीव ने बनगांव के माध्यम से महाराष्ट्र के किसानों के परिवारों में झांका है। गोदान में होरी मृत्यु के बाद झुनिया का अन्त नहीं होता पर महाराष्ट्र में एक किसान के साथ उसका पुरा परिवार खत्म हो जाता है। उपन्यास में ही नहीं विदर्भ और महाराष्ट्र में कई घटनाएं ऐसी दिखाई देगी जहॉ किसी किसान की पत्नी ने आत्महत्या की है। संजीव ने इस घटना की गंभिरता को समझते हुए, बडे. संजिदगी के साथ आशा वानखेडे की आत्महत्या वाली घटना को उपन्यास में प्रस्तुत किया है। युं तो कोई मीडिया या सरकार किसी महिला किसान

की आत्महत्या को दर्शाती नहीं क्योंकि सरकारी नियमों के अनुसार महिला किसान नहीं हो सकती। उसके नाम जमिन का छोटा टुकड़ा भी नहीं होता। उपन्यास में उसकी मौत तो कर्ज के कारण ही होती है लेकिन उसे कोई मुआवजा नहीं मिलता। रिपोर्ट में लिखा होता है, ''शराबी पति आए दिन के घरगुती के झगड़े से तंग आकर उसने ज़हर पी लिया।''[१०]

किसान अपनी मेहनत से कपास, गन्ना (उख) या फिर जवार और गेव्हू की फसल का निर्माण करता है। फसल पक कर जब बाजार में आती हैं तो उसका मूल्य आंकने का अधिकार उसे नहीं होता। यह मार्केट कमिटि के दलाल उसका मूल्य निर्धारित करते हैं। किसान को तो पता ही नहीं होता कि उसकी फलस का मूल्य कितना निर्धारित किया गया। कभी कभी किसान कम दामों पर अपनी फसल देने से इन्कार कर देते तब उस फसल को वहीं पर सड़ने गलने के लिए फेंक दिया जाता है। उपन्यासकार कहता है, ''ये कितने ताकतवर हैं, इसका एक उदाहरण यहीं आपके सामने है। आपने अखबारों में पढ़ा ओर टी. वी. में देखा होगा कि हजारों मैट्रिक टन गेहूँ खुले में सड़ गया। अपने यहाँ भी यही हुआ। दरअसल वह सड़ नहीं गया, बल्कि उसे सड़ जाने दिया गया। क्यों ...? सड़े हुए गेहूँ से शराब बनती है। लग गयी बोली। उस सड़े हुए गेहूँ को सस्ते में उन्हीं लोगों ने ले लिया जिन्होंने उसे खुले में छोड़कर नष्ट किया था। पहले सड़ाया, फिर शराब बना दी-सस्ते में खरीदकर। ट्रिपल क्राइम।''[११] कुल मिलाकर कहे तो किसानों को सभी ओर से प्रताडित किया जाता है। पहले तो सरकार फिर साहुकार, फिर बिचैले, फिर नेता सभी उसे लुटने का अवसर ही ढूंढते हैं। अतः यही कहा जा सकता है कि भारतीय किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, और कर्ज में ही मरता है। एक ओर उसे हम अन्नदाता कहते हैं और दूसरी ओर उसे आत्महत्या करने पर प्रेरित करते हैं।

संदर्भ

१ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ ९

२ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - १७

३ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - १७

४ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - १७

५ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - १०५

६ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - ११६

७ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - ११६

८ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - १०९

९ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - ३६

१० संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - १४५

११ संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : २०१५, पृष्ठ - २००

Arts Science & Commerce College Naldurg

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602